4 सामाजिक परिवर्तन के प्रौद्योगिक एवं आर्थिक कारक

[TECHNOLOGICAL AND ECONOMIC FACTORS OF SOCIAL CHANGE]

वर्तमान युग में नयी प्रौद्योगिकी को सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रमुख कारक स्वीकार किया जाता है। जब कभी भी कोई नया आविष्कार होता है तो इससे हमारे जीवन में अपनी दशाओं से नये सिरे से अनुकूलन करने की समस्या उत्पन्न हो जाती है। नये आविष्कारों से व्यक्तियों के व्यवहारों और मनोवृत्तियों में होने वाले परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया उत्पन्न कर देते हैं। आज से कुछ समय पहले तक जब छापाखाने, रेडियो, टेलीविजन, बिजली, स्वचालित गाड़ियों और अणु-शक्ति का आविष्कार नहीं हुआ था तो हमारा सामाजिक जीवन आज से बिल्कुल भिन्न था। इन आविष्कारों के फलस्वरूप लगभग 150 वर्ष पहले तक बिल्कुल आदिम जीवन व्यतीत करने वाले समाज आज संसार की सभ्यता का नेतृत्व करने लगे हैं। स्वयं हमारे समाज में मशीनों द्वारा उत्पादन होने के फलस्वरूप हमारे सामाजिक सम्बन्धों, परम्परागत नियमों, जाति-व्यवस्था, रूढ़िवादी विश्वासों और समाज की संरचना में इतने व्यापक परिवर्तन हो गये कि कुछ समय पहले तक इनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज हमारे जीवन की कोई भी सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक अथवा राजनीतिक संस्था ऐसी नहीं है जो प्रौद्योगिक विकास से प्रभावित न हुई हो। अनेक विद्वान् यह मानते हैं कि आर्थिक आवश्यकताएँ ही सामाजिक प्रक्रियाओं का मूल आधार हैं। स्पष्ट है कि सामाजिक परिवर्तन भी एक बड़ी सीमा तक मानव के उन प्रयत्नों से सम्बन्धित होता है जिनके द्वारा वह तरह-तरह से अपनी आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करता है। उदाहरण के लिए, सामन्तवादी युग में समाज के प्रभावशाली लोगों ने ऐसे विश्वासों और नियमों को प्रभावपूर्ण बनाया जिनसे परिवर्तन पर नियन्त्रण रखकर वे अपने अधिकारों को सुरक्षित बनाये रख सकें। पूँजीवाद के विकास के साथ आर्थिक संस्थाओं में कुछ परिवर्तन हुआ लेकिन अमीरी और गरीबी की खाई इतनी गहरी हो गयी कि समाज में वर्ग-संघर्ष की दशा पैदा होने लगी। समाजवाद की आर्थिक संस्थाएँ आर्थिक असमानताओं को कम करके धन के समान वितरण को प्रोत्साहन देती हैं। इसका तात्पर्य है कि विभिन्न समाजों में आर्थिक प्रणालियाँ तथा उनसे सम्बन्धित आर्थिक दशाएँ सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारण हैं। सामाजिक परिवर्तन में प्रौद्योगिकी तथा आर्थिक कारकों के इस महत्व को देखते हुए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम प्रौद्योगिकी के अर्थ को समझकर यह मूल्यांकन करने का प्रयत्न किया जाये कि विभिन्न प्रौद्योगिक तथा आर्थिक कारक किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन की दशा उत्पन्न करते हैं।

प्रौद्योगिकी का अर्थ
(MEANING OF TECHNOLOGY)

साधारणतया हम यह समझते हैं कि प्रौद्योगिकी का अर्थ मशीनों के उपयोग अथवा मशीनीकरण (Mechnazation) से है। कुछ व्यक्ति प्रौद्योगिकी को आर्थिक विकास के एक साधन के रूप में देखते हैं। **ऑगबर्न** (Ogburn) ने इस समस्या को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि "प्रौद्योगिकी शब्द का प्रयोग बहुत अवैज्ञानिक रूप से किया जाता है। कुछ व्यक्ति यह समझते हैं कि प्राविधिक शिक्षा संस्थाओं में उन्हें इंजीनियरिंग अथवा विद्युत् शक्ति के बारे में जो शिक्षा दी जाती है, उसी को प्रौद्योगिकी कहा जाता है। बहुत-से कारीगर प्रौद्योगिकी को एक ऐसी विशेषता के रूप में देखते हैं जिसने उनकी सम्पूर्ण कला को नष्ट कर दिया। अनेक व्यक्ति प्रौद्योगिकी को बेरोजगारी पैदा करने वाले आधार के रूप में देखते हैं

Scanned with CamScanner

जबकि श्रमिक-संघ इसे अपने अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा मान लेते हैं। वास्तव में, ऐसे
विचार अत्यधिक दोषपूर्ण हैं।"[1]

प्रौद्योगिकी के अर्थ को बहुत संक्षेप में स्पष्ट करते हुए **ऑगबर्न** ने कहा कि "प्रौद्योगिकी का
किसी भी प्रविधि से है।"[2] इसका तात्पर्य है कि कोई भी वह प्रविधि जिसके द्वारा हम अपने विभि
उद्देश्यों अथवा आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, प्रौद्योगिकी का उदाहरण है। इस दृष्टिकोण से प्रवि
अथवा प्रौद्योगिकी का सम्बन्ध ऐसे सभी उपकरणों और नवीन ज्ञान से है जो विभिन्न क्षेत्रों में हमारे उद्देश्
की पूर्ति का प्रत्यक्ष साधन होते हैं।

प्रौद्योगिकी एक सामाजिक तथ्य है। इसका कारण यह है कि विभिन्न व्यक्तियों और वर्गों
सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही विभिन्न आविष्कार और व्यवहार के नये ढंग
लेते हैं। इस सन्दर्भ में यह ध्यान रखना आवश्यक है कि मानव सभ्यता के प्रत्येक स्तर पर किसी-न-कि
प्रौद्योगिकी के द्वारा ही व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूरा करते रहे हैं। पाषाण युग में पत्थर के औज
उस समय की प्रौद्योगिकी थी, जबकि सामन्तवादी युग में हल, बैल और कुदाल जैसी प्रौद्योगिकी के द्वा
कृषि-कार्य किया जाता था। आज यह प्रौद्योगिकी बहुत उन्नत अवस्था में है तथा प्रौद्योगिकी में होने वाले
विकास में लगातार संचयी वृद्धि होती जा रही है। आज प्रौद्योगिकी का सम्बन्ध उन सभी विकसित उपकरणों
और मानवीय ज्ञान से है जिसके द्वारा विज्ञान का इतना विकास हो सका। प्रौद्योगिकी में होने वाला यह
परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन का सबसे प्रमुख कारण है।

प्रोफेसर सरन ने लिखा है, "किसी उद्देश्य अथवा उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अप्रत्यक्ष तथा उच्च
श्रेणी के साधनों की व्यवस्था को ही हम प्रौद्योगिकी कहते हैं।"[3] इससे स्पष्ट होता है कि जो साधन
वस्तुएँ प्रत्यक्ष रूप से हमारे उद्देश्यों को पूरा करती हैं, वे स्वयं प्रौद्योगिकी नहीं होतीं बल्कि इन साधनों
का निर्माण करने वाले उपकरणों अथवा ज्ञान को प्रौद्योगिकी कहा जाता है। इसका अर्थ है कि यदि हमारा
उद्देश्य उत्पादन करना है तो ऐसे उत्पादन में प्रत्यक्ष योगदान करने वाली मशीनों को प्रौद्योगिकी नहीं
कहा जायेगा बल्कि जिस ज्ञान अथवा उपकरणों के द्वारा इन मशीनों का निर्माण किया जाता है, उस ज्ञान
तथा उपकरणों को प्रौद्योगिकी कहा जायेगा। इसी तरह यदि हमारा उद्देश्य यात्रा करना है तो एक रेल
अथवा कार इस यात्रा का प्रत्यक्ष साधन होगी, जबकि इन साधनों का निर्माण करने वाले उपकरणों और
ज्ञान को प्रौद्योगिकी कहा जायेगा। इससे स्पष्ट होता है कि कोई वस्तु स्वयं में प्रौद्योगिकी नहीं होती बल्कि
उसका प्रौद्योगिकी होना इस तथ्य पर निर्भर है कि वह हमारे उद्देश्यों को किस रूप में पूरा करती है। दूसरे
शब्दों में, **प्रौद्योगिकी कोई भौतिक वस्तु न होकर एक प्रविधि है।**

लेपियर (Lapiere) ने प्रौद्योगिकी को परिभाषित करते हुए लिखा है, "प्रौद्योगिकी का तात्पर्य
उन सभी विधियों, ज्ञान की शाखाओं तथा कुशलताओं से है जिनके द्वारा मनुष्य अपनी भौतिक और
जैविकीय दशाओं पर नियन्त्रण रखकर उन्हें उपयोग में लाता है।"[4] इसका तात्पर्य यह है कि जैसे-जैसे
प्रौद्योगिकी का विकास होता जाता है, मानव का अपनी भौतिक और जैवकीय दशाओं पर नियन्त्रण बढ़ता
जाता है।

कार्ल मार्क्स (Karl Marx) ने प्रौद्योगिकी की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए कहा है, "प्रौद्योगिकी
प्रकृति के साथ मनुष्य के कार्य करने के ढंग तथा उत्पादन के उन तरीकों को स्पष्ट करती है जिनके द्वारा
व्यक्ति जीवित रहता है तथा अपने सामाजिक सम्बन्धों और मानसिक धारणाओं के स्वरूप का निर्धारण
करता है।"[5] इससे स्पष्ट होता है कि प्रौद्योगिकी कोई भी वह तथ्य है जिसका सम्बन्ध उत्पादन के तरीकों
से है। उत्पादन के यही तरीके मनुष्य की आवश्यकताओं को एक विशेष ढंग से पूरा करके पारस्परिक
सम्बन्धों और मनोवृत्तियों को प्रभावित करते हैं।

1 W. F. Ogburn and Others, *Technology and Social Change*, pp. 3-4.
2 W. F. Ogburn, quoted by Cuber and Harroff, *Readings in Sociology*, p. 95.
3 "Technology is a system of second and higher order means to any given end or set of ends."
—*Prof. Sar*
4 "Technology consists of the devices, knowledges and skills by which men control and utilize physical and biological phenomena."
—Lapiere, *Social Change*, p. 25
5 Karl Marx, *The Capital*, Vo. I, p. 372.

Scanned with CamScanner

मैकाइवर (MacIver) ने प्रौद्योगिकी की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए बताया है कि प्रौद्योगिकी की प्रकृति एक ही दिशा में आगे की ओर बढ़ने की होती है। एक सरल प्रौद्योगिकी का रूप निरन्तर जटिल और पहले से अधिक कुशल होता जाता है। प्रौद्योगिकी एक मूर्त विशेषता है क्योंकि इसकी उपयोगिता को कोई भी व्यक्ति देख और समझ सकता है। यह मापनीय होती है क्योंकि इसके द्वारा लाये जाने वाले परिवर्तनों की स्पष्ट माप की जा सकती है। यही वे विशेषताएँ हैं जो प्रौद्योगिकी को सामाजिक परिवर्तन के एक प्रमुख कारक के रूप में स्पष्ट करती हैं।

सामाजिक परिवर्तन में प्रौद्योगिक कारकों की भूमिका
(ROLE OF TECHNOLOGICAL FACTORS IN SOCIAL CHANGE)

वर्तमान युग में प्रौद्योगिक कारक सामाजिक परिवर्तन लाने में सबसे अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुए हैं। आज से कुछ समय पहले तक, जब प्रौद्योगिकी का रूप बहुत सरल था, तब व्यक्तियों की आवश्यकताएँ भी बहुत कम थीं। समुदाय का आकार छोटा रहने से धर्म, जाति और परम्परागत नियमों के द्वारा ही व्यक्ति के व्यवहारों पर नियन्त्रण रखा जाता था। ग्रामीण और अधिकांश दूसरे समुदायों का जीवन बहुत कुछ आत्मनिर्भर था। जैसे-जैसे प्रौद्योगिकी में विकास होने लगा, हमारे सामाजिक सम्बन्धों, सांस्कृतिक दशाओं, अर्थ-व्यवस्था तथा राजनीतिक व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन होने लगे। अकेले भाप के इंजन का आविष्कार होने से ही स्थानीय गतिशीलता इतनी अधिक बढ़ गयी कि इसने हमारे सामाजिक-आर्थिक जीवन में व्यापक परिवर्तन कर दिए। इन परिवर्तनों से अनेक क्षेत्रों में प्रगति होने के साथ ही अनेक गम्भीर समस्याएँ भी उत्पन्न हुईं। इसका अर्थ है कि प्रौद्योगिक कारकों के आधार पर यह सरलतापूर्वक समझा जा सकता है कि सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न करने में इनकी भूमिका कितनी अधिक महत्वपूर्ण है। इस तथ्य को विभिन्न प्रौद्योगिक कारकों के प्रभाव से उत्पन्न होने वाले सामाजिक परिवर्तनों के आधार पर सरलतापूर्वक समझा जा सकता है।

1. यन्त्रीकरण तथा सामाजिक परिवर्तन (Mechanization and Social Change)—यन्त्रीकरण का तात्पर्य मशीनों के अधिकाधिक उपयोग के द्वारा मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति होना है। यह यन्त्रीकरण ही वर्तमान युग में वह सर्वप्रमुख प्रौद्योगिक कारक है जिसे सामाजिक परिवर्तन के लिए सबसे अधिक उत्तरदायी माना जाता है। यन्त्रीकरण का आरम्भ पहिये के आविष्कार, भाप की शक्ति के उपयोग तथा बेतार के तार के ज्ञान से हुआ। आज इन्हीं से सम्बन्धित इतने विकसित आविष्कार हो चुके हैं जिन्होंने मानव जीवन में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न कर दिये। नयी-नयी मशीनों का आविष्कार होने के कारण हमारे सामाजिक सम्बन्धों की प्रकृति, पारिवारिक संगठन, सामाजिक मूल्यों, सामाजिक संस्थाओं तथा व्यवहार के ढंगों में आमूल परिवर्तन होने लगे। **सर्वप्रथम**, मशीनीकरण के फलस्वरूप बड़ी मात्रा में उत्पादन होने से लाभ की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिला। इससे हस्त-शिल्प और सामूहिक जीवन का महत्व कम हो गया। जीवन के सभी क्षेत्रों में प्रतियोगिता बढ़ने से आर्थिक वर्गों का निर्माण हुआ। समाज की नयी वर्ग-व्यवस्था ने व्यक्तियों के पारस्परिक सम्बन्धों की प्रकृति को भी बदल दिया। **दूसरे**, स्त्रियों में जागरूकता उत्पन्न करने में भी मशीनीकरण का प्रत्यक्ष योगदान है। केवल प्रेशर कुकर, गैस के चूल्हों तथा कपड़े धोने और सफाई की मशीनों के कारण स्त्रियों को परिवार में इतना खाली समय मिलने लगा कि उन्होंने संगठित होकर शिक्षा और सम्पत्ति के अधिकारों की माँग करना आरम्भ कर दी। **तीसरे**, यन्त्रीकरण के फलस्वरूप एक ही स्थान पर विभिन्न धर्मों, जातियों और विचारों के लोगों को साथ-साथ रहकर कार्य करने के अवसर मिले। इससे जाति के नियम कमजोर पड़े, संयुक्त परिवारों का विघटन होने लगा तथा व्यक्तियों के बीच द्वितीयक या हित-प्रधान सम्बन्ध विकसित होने लगे। **चौथे**, यन्त्रीकरण के फलस्वरूप सामूहिक जीवन के स्थान पर व्यक्तिवादिता में वृद्धि हुई। इससे हमारी सांस्कृतिक विशेषताएँ कमजोर पड़ने लगीं। **पाँचवें**, सामाजिक मूल्यों और नैतिक नियमों में होने वाला परिवर्तन भी यन्त्रीकरण का परिणाम है। आर्थिक सफलता को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानने के कारण हम उसी व्यक्ति का सम्मान करने लगे जो धनी, शक्तिशाली अथवा अधिकार सम्पन्न होता है। नैतिकता, चरित्र, शिष्टता तथा आयु व्यक्ति के सम्मान का आधार नहीं रहे। **अन्त में**, मशीनीकरण से व्यक्तियों को यह विश्वास हो गया कि अपने प्रयत्नों के द्वारा सभी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। इससे धार्मिक विश्वासों के प्रभाव में कमी हुई तथा व्यक्ति के व्यवहारों पर कानून द्वारा नियन्त्रण स्थापित करना आवश्यक हो गया।

Scanned with CamScanner

(2) **कृषि की नयी प्रविधियों द्वारा परिवर्तन** (Change through New Techniques of Agriculture)—कृषि की नयी प्रविधियाँ वह दूसरा प्रौद्योगिक कारक है जिसने सामाजिक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कृषि के उन्नत उपकरण, उन्नत किस्म के बीज, पशुपालन की नयी प्रविधियाँ तथा फसल बोने और काटने की मशीनों ने ग्रामीण सामाजिक तथा आर्थिक संरचना में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किये। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में कृषि की प्रविधियों में होने वाला कोई भी परिवर्तन सम्पूर्ण सामाजिक जीवन में परिवर्तन लाने की दिशा में अत्यधिक निर्णायक होता है। हमारे देश में कुछ समय पहले तक कृषि पूर्णतया परम्परागत और पिछड़ी हुई प्रविधियों पर आधारित थी। इसके फलस्वरूप ग्रामीण जीवन भी बहुत सरल और आत्मनिर्भर था। कृषि की नयी प्रविधियों का उपयोग बढ़ने से कृषि का व्यापारीकरण होने लगा। नवीन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए नये बाजारों का विकास हुआ द्वितीयक सम्बन्धों का महत्व बढ़ने लगा तथा ग्रामीण समुदाय की आत्म-निर्भरता कम होने लगी। ग्रामीण जीवन-स्तर में सुधार हो जाने के कारण सामाजिक जागरूकता में वृद्धि हुई तथा परम्पराओं और अन्धविश्वासों का प्रभाव कम हो गया। प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने से ग्रामों में भौतिक सुख-सुविधाओं के प्रति आकर्षण बढ़ने लगा। यह सभी वे महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं जो गाँवों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया को स्पष्ट करते हैं।

(3) **परिवहन तथा संचार के साधनों द्वारा परिवर्तन** (Change through Means of Transportation and Communication)—परिवहन तथा संचार के नये साधन भी सामाजिक परिवर्तन उत्पन्न करने वाले महत्वपूर्ण प्रौद्योगिक कारक हैं। परिवहन के उन्नत साधनों, जैसे—हवाई जहाज, रेल, बसों तथा कारों के फलस्वरूप विभिन्न समूहों के बीच की स्थानीय दूरी का प्रभाव कम हो गया। इससे सभी समूहों को एक-दूसरे के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। फलस्वरूप सामाजिक सम्बन्धों का क्षेत्र अधिक व्यापक बन गया। दूसरी ओर, संचार की नयी प्रविधियों, जैसे—टेलीविजन, रेडियो, टेलीफोन तथा फैक्स आदि के फलस्वरूप हम किसी भी घटना की जानकारी कुछ ही क्षणों में प्राप्त कर सकते हैं। इन दशाओं के प्रभाव से विभिन्न समूहों के बीच आदान-प्रदान की प्रक्रिया आरम्भ हुई। एक ओर ग्रामीण और नगरीय समुदायों के बीच का अन्तर कम होने लगा तो दूसरी ओर, विभिन्न समूहों के व्यवहार एक-दूसरे की संस्कृतियों से प्रभावित होने लगे। परिवहन तथा संचार की सहायता से व्यक्ति के अनुभवों में भी वृद्धि हुई। सभी व्यक्ति जानते हैं कि संचार के साधन के रूप में केवल टेलीविजन तथा चलचित्रों ने हमारी नैतिकता, परम्परागत विचारों, परिवार-व्यवस्था तथा स्त्रियों की स्थिति में परिवर्तन लाने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। आज सामाजिक नियन्त्रण को अधिक प्रभावपूर्ण बनाने में भी परिवहन और संचार के साधनों की भूमिका कम महत्वपूर्ण नहीं है।

(4) **नयी उत्पादन प्रणाली तथा सामाजिक परिवर्तन** (New Mode of Production and Social Change)—अनेक विद्वानों ने नयी उत्पादन प्रणाली को सबसे महत्वपूर्ण प्रौद्योगिक कारक के रूप में स्वीकार किया है। वर्तमान उत्पादन प्रणाली एक ऐसी प्रविधि पर आधारित है जिसमें श्रम-विभाजन और विशेषीकरण के द्वारा बड़ी मात्रा में उत्पादन किया जाता है। इस उत्पादन का उद्देश्य अधिक-से-अधिक लाभ प्राप्त करना है। नवीन उत्पादन प्रणाली के फलस्वरूप बड़े-बड़े व्यापारिक संघों की स्थापना हुई। कारखानों में हजारों श्रमिकों ने साथ-साथ कार्य करना आरम्भ किया। मार्क्स का विचार है कि उत्पादन प्रणाली में परिवर्तन होने से उद्योगपतियों और श्रमिकों के आर्थिक सम्बन्धों के नये प्रतिमान विकसित हुए। समाज में नये वर्गों का प्रादुर्भाव होने से उनके बीच वर्ग-संघर्ष होने लगा। नयी उत्पादन प्रणाली से प्राथमिक सम्बन्धों की जगह औपचारिक अथवा हित-प्रधान सम्बन्धों को प्रोत्साहन मिला। एक ओर गाँव से नगर की ओर आकर कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों की बड़ी संख्या के कारण स्थानीय गतिशीलता में वृद्धि हुई तो दूसरी ओर, कुटीर उद्योग नष्ट होने से गाँवों में भी बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न हो गयी। बड़ी मात्रा के उत्पादन से नये-नये व्यवसायों का विकास हुआ। इसने कुछ समूहों की आर्थिक दशा में सुधार किया लेकिन साथ ही अनेक सामाजिक और आर्थिक समस्याओं ने भी गम्भीर रूप ले लिया। हमारे देश में नयी उत्पादन प्रणाली के फलस्वरूप संयुक्त परिवार-व्यवस्था टूटने लगी। व्यक्तियों के सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन आने से धीरे-धीरे सम्पूर्ण सामाजिक संरचना में परिवर्तन होने लगे।

(5) **प्रौद्योगिक ज्ञान द्वारा परिवर्तन** (Change through Technological Knowledge)—लेपियर (Lapiere) ने यह स्पष्ट किया है कि प्रौद्योगिकी का तात्पर्य केवल मशीनों के आविष्कार से नहीं होता बल्कि इसका मुख्य सम्बन्ध उस नवीन ज्ञान से है जिसकी सहायता से हम अपनी विभिन्न

Scanned with CamScanner

आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। यही प्रौद्योगिक ज्ञान वह कारक है जिसने सामाजिक परिवर्तन लाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। प्रौद्योगिक ज्ञान एक तार्किक ज्ञान है जिसमें रहस्यमय विश्वासों और परम्पराओं का कोई स्थान नहीं होता। प्रौद्योगिक ज्ञान केवल उसी तथ्य को स्वीकार करता है जिसे प्रयोग अथवा तर्क के आधार पर समझा जा सके। इसके फलस्वरूप समाज में लोगों के धार्मिक विश्वासों और परम्परागत व्यवहारों का प्रभाव कम होने लगता है। प्रौद्योगिक ज्ञान के फलस्वरूप अनेक ऐसे नियमों तथा संस्थाओं का विकास हुआ जिन्हें कुछ समय पहले तक अधार्मिक समझा जाता था।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट होता है कि विभिन्न प्रौद्योगिक कारकों ने समाज में अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के परिवर्तन उत्पन्न करके हमारे सामाजिक सम्बन्धों तथा सामाजिक संरचना को प्रभावित किया है। एक ओर प्रौद्योगिक कारकों ने विशेषीकरण, श्रम-विभाजन, तार्किकता, उच्च जीवन स्तर, सामाजिक गतिशीलता तथा नगरीकरण को प्रोत्साहन देकर अनेक लाभ प्रदान किये तो दूसरी ओर, इसने प्रतिस्पर्द्धा, व्यक्तिवादिता, व्यावसायिक अनिश्चितता, बेरोजगारी, पारिवारिक तनाव तथा अपराधों में वृद्धि करके हमारे सामाजिक जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया। ये सभी दशाएँ सामाजिक परिवर्तन में प्रौद्योगिक कारकों की भूमिका को स्पष्ट करती हैं।

Scanned with CamScanner